CCRH Quarterly Bulletin
Vol.21(3&4) 1999

भारतीय तथा कम प्रचलित औषधियों का सामान्य रोगों में सत्यापन*

*प्रमोदजी सिंह***

दमा

१. **बेरायटा म्यूर** : श्वाँस नली में प्रदाह तथा सूजन के साथ श्लेषमा का इक्ट्ठा होना । छाती में खड़खड़ाहट होना तथा बलगम का कठिनाई के साथ बाहर निकलना । वृद्ध लोगों में हृदय का बढ़ जाना एवं श्वाँस नली के प्रभावित हो जाने में इस औषधि की उपयुक्त क्रिया होती हैं । फेफड़े के आरटेरियल सक्लेरोसिस हो जाने के कारणहो जाना जो बाद में परिवर्तित होकर धमनियों में तनाव पैदा कर उच्च रक्त चाप पैदा करने का कारण बन जाता है ।

२. **बैसिलिनम** : क्षय रोग की प्रवृति के व्यक्तियों में कठिन खाँसी एवं सर्दी की प्रकृति का बने रहना, रात्रि के समय गले का अवरोध एवं खाँसी का उग्र हो जाना श्वाँस कृच्छता तथा गले का अवरोध हो जाना जो मुख्यत: रात्रि, ठंडी हवा तथा सुबह के समय ज्यादा हो जाता है । छाती में एक प्रकार की विशेष आवाज के साथ श्लेष्माए मवाद की तरह गाढ़ा पीला आना ।

३. **ब्लाटा ओरिन्टेलिस** : इसकी क्रिया मोटे एवं पुष्ट रोगियों पर अच्छी होती हैं । खाँसी के साथ श्वाँस कृच्छता जो बरसात के मौसम में बढ़ जाता है । कफ के साथ श्लेष्मा का पीला मवाद की तरह आना । दमा के साथ श्वाँस नली में प्रदाह, खाँसी एवं श्वाँस कृच्छ का प्रगट होना ।

४. **कैनाविस सटाइवा** : छाती में सायं-सायं की आवाज के साथ श्वाँस का आना सांस लेते समय सीने पर दबाव महसूस होना जिससे घबराहट होती है और रोगी उठ कर खड़ा हो जाता है । कफ के साथ खून मिला चिपचिपा हरे रंग का बलगम का आना जो सीढ़ी चढ़ने व टहलने से बढ़ जाता है ।

५. **जस्टिसिया अधाटोडा** : लगातार उग्र और तेज खाँसी, खाँसते-२ सांस फूलना, छाती में बहुत बलगम जमा रहना तथा दबाव श्वाँस (दमा) का दौरे जब पड़ता तो रोगी गरम व बन्द कमरा सहन नहीं कर सकता है । व्हूपिंग खाँसी में भी यह दवा लाभप्रद है ।

---

* गतांक (Quarterly Bulletin 21(1&2) 1999) से आगे ।

** सहा.अनु.अधि. (होम्यो.), चिकित्सा सत्यापन एकांश, वृंदावन, उत्तर प्रदेश ।

६. **काली म्यूर** : खाँसी के साथ पेट की गड़बड़ी । खाँसी थोड़े समय के लिये दौरे के रूप में हूपिंग कफ की तरह होती है । श्लेष्मा का रंग सफेद होता है, जो काफी खाँसने पर बाहर आता है । सर्दी-जुकाम की स्थिति में भी बलगम गाढ़ा तथा सफेद आता है । श्वाँस नली में बलगम चिपक जाने के कारण सायं-सायं की आवाज होती है ।

७. **विस्कम एल्बम** : दमा के साथ गठिया - वात का संबंध होने पर यह औषधि उपयोगी है । श्वाँस कृच्छता के साथ बांयी करवट लेटने पर रोगी का श्वाँस (दम) अटकता है । श्वाँस खड़खड़ाहट के साथ रूक-रूक कर आती हैं । खाँसी का दौरा ठंड और सर्दी के मौसम में बढ़ जाता है ।

८. **सार्सापरिला** : दमा का रोग लेटने पर बढ़ता है ।

९. **कैसिया सोफेरा** : दमा रोग के साथ सूखी खाँसी के दौरे तथा छाती में दर्द श्वाँस कृच्छ, श्वाँस लेने में धूल सर्दी मौसम परिवर्तन, ठंडे पेय, धूवें सुबह, शाम, रात्रि और टहलने से बढ़ता है ।

सर्दी

१. **कैसिया सोफेरा** : सर्दी में नाक से पतला स्त्राव जो टहलने से बढ़ता है । नासा स्त्राव, पतला, तीखा एवं पानी की तरह होता है जो रात्रि एवं टहलने के समय विशेष हो जाता है । नासा स्त्राव रात्रि के समय तथा ढंड से बन्द हो जाती है । जिसमें दिन के समय में आराम मिलता है । रोगी को ऐसा अनुभव होता है कि उसकी बांयी नाक बन्द हो रही है ।

२. **फैगोपाइरम एस्कुलेनटम** : पतले जुकाम के साथ छींके, उसके बाद नाक में सूखापन तथा पपड़ी का जमना । नाक में लाली, खराश तथा प्रदाह का बना रहना ।

३. **जस्टिसिया अधाटोडा** : नाक से बहुत ज्यादा मात्रा में श्लेष्मा का निकलना तथा लगातार छींको का आना । नाक में सूजन दर्द और श्लेषमा के कारण नाक का बन्द हो जाना । कपाल में भारीपन व दर्द तथा कभी आँखों से पानी आना । जुकाम के साथ खाँसी में भी यह दवा लाभप्रद है ।

४. **काली म्यूर** : इसमें जुकाम गाढ़ा और सफेद होता है और कभी ज्यादा स्त्राव के कारण बन्द हो जाती है ।

५. **लैक कैनिनम** : जुकाम के कारण पारीवत नाक का एक छेद बन्द तथा दूसरा खुला रहता है एवं जब दूसरा बन्द हो जाता है तो पहला खुल जाता है । नाक एवं मुख के किनारे फट जाते हैं । नाक की हड्डी दबाने से उसमें बक-बकापन व दर्द महसूस होता है ।

६. **एब्रोमा आगस्टा** : नाक से पतला स्त्राव तथा दिन में कई बार छींकों का आना, नाक में सूखापन तथा खुश्की, जिसे बार-बार रगड़ने की इच्छा बनी रहती हैं ।

७. **सराका इंडिका** : जुकाम में नाक से अत्याधिक पानी, छींकें, नाक में लालीपन, नाक का बन्द हो जाना, गन्ध हीनता, नाक के अन्दर घाव तथा उनसे लाल रंग का खून का बहना ।

ग्रीवा ग्रंथिशोथ

१. **बेरायटा आयोड** : ग्रीवा ग्रन्थि (सरवाइकल ग्लैन्ड) का बढ़ी हुई होना तथा शरीर के वृद्धि के रूक जाने में यह औषधि लाभप्रद है ।

२. **हैक्लालावा** : ग्रीवा ग्रन्थि में कड़ापन एवं वृद्धि में यह लाभप्रद है ।

३. **बैसिलिनम** : ग्रीवा ग्रन्थि का बढ़ी होना तथा उसे छूने का दर्द महसूस होना । परिवार में क्षय रोग का इतिहास विद्यमान होने में यह लाभप्रद है ।

स्वरयंत्र प्रदाह

१. **बर्बेरिस वुलगेरिस** : स्वर भंग, स्वरयंत्र में गांठे, बाँयी तरफ हृदय के स्थान के पास दर्द का महसूस होना ।

२. **कैसिया सोफेरा** : स्वरयंत्र प्रदाह ।

३. **जस्टिसिया अधाटोडा** : सुखी खाँसी, स्वर भंग (आवाज का बैठना) तथा स्वरयंत्र में दर्द ।

४. **फेरम पिकरीकम** : भाषण देने के पश्चात स्वर का भंग (गला बैठना) हो जाना ।

५. **ट्रेरेन्टला हिस्पैनिका** : स्वर ह्रास के साथ श्वाँस लेने में कठिनाई ।

अर्श (बवासीर)

१. ईगल **मारमेलस** : अर्श में सूजन व दर्द, भूख का कम हो जाना, कब्ज, मल, असन्तोष के साथ तथा आँवयुक्त होना ।

२. **सराका इण्डिका** : खुनी व वादी अर्श के साथ खुजली मल का कड़ापन तथा अनियमित मल त्याग होना ।

३. **टर्मिनोलिया चेबुला** : मलद्वार में दबाव तथा भारीपन के साथ शौच जाने की बार-बार इच्छा प्रगट होना । मल थोड़ा तथा दबाव देने के पश्चात् बाहर निकलना ।

४. **टेला एरैनिया** : कब्ज, मल खुश्क तथा तकलीफ से बाहर आना । मलद्वार में जलन । शौच के समय अर्श से रक्त स्त्राव का होना ।

५. **साइनोडान डेक्टाइलान** : अर्श से गहरा कालापन लिये खून आना । खूनी बवासीर में यह लाभप्रद है ।

६. **एकैलिफा इण्डिका** : अर्श से खूनी, लाल चमकीले रंग का रक्त स्त्राव जो सुबह के समय विशेष बढ़ जाता है ।

तुण्डिकाशोथ (टान्सिलाइटीस)

१. **बेरायटा आयोड** : गले की गिल्टी में प्रदाह सूजन तथा कड़ापन । गले में भोजन करते समय कठिनाई तथा दर्द का बढ़ जाना ।

२. **बेरायटा म्यूर** : गले की गिल्टी में प्रदाह व खराश । जिसमें शीतल पेय से वृद्वि व गरम पेय से आराम आता है ।

३. **टरेन्टुला हिस्पैनिका** : तालुमूल में प्रदाह सूजन तथा गले में खराश तो संध्या एवं रात्रि के समय विशेष हो जाता है ।

४. **टेला एर्रेनिया** : गले की गिल्टी में प्रदाह जो मुख्यत: दाहिने तरफ की गिल्टी में मिलता है । गले में दर्द के साथ ऐसा महसूस होना जैसे कोई वस्तु चिपक रही हो । गले का दर्द निगलने में बढ जाता है ।

उपजिव्ह्म प्रदाह

१. **फेगोपाइरम एस.** : उपजिव्ह्म में वृद्धि तथा गले में अर्ध पक्कापन और ऐसा प्रतीत होना की गले की खाल निकल रही है ।

२. **हाइड्रोकोटाइल एसिएटिका** : गले में खुश्की के साथ भोजन नली मे जलन जिसमें शीतल पेय से आराम आता है ।

३. **टरेन्टुला क्यूबेन्सिस** : उपजिव्ह्म में सूजन व दर्द जो निगलने से बढ़ता है तथा गरम वस्तु लेने से आराम मिलता है ।